

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

२८

तंदुलवेयालियं-पंचमं पड्णयं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / / 2012

Jain Aagam Online Series-28

२८

गंथाणुक्कमो

कमंको	विसय	सुतं	गाहा	अणुक्कमो	पिट्ठंको
१	मंगलं-दाराणि	--	१-३	१-३	१
२	गळ्भ-पयरण	१-११	४-३०	५-४२	१
३	जंतुस्स दस-दसाओ	१२	३१-४४	४३-५७	४
४	धम्म-उवएस व फल	१३-१४	४५-४९	५८-६४	५
५	देहसहनन-आहारइ	१५-१६.२	५०-५६	६५-७४	६
६	काल-पमाणं	--	५७-७६	७५-९५	८
७	अनिवयं असुईत्तं आइ पडूवणा	१६-३-१७	७७-९५	९६-११६	९
८	उवएस-उवसंहार	१८-२०	९६-१३९	११७-१६१	११

२८ तंदुलवेयालियं – पंचमं पइण्णयं

- [१] निज्जरियजरा-मरणं वंदिता जिनवरं महावीरं ।
वोच्छं पइन्नगमिणं तंदुलवेयालियं नाम ॥
- [२] सुणह गणिए दस दसा वाससयाउस्स जह विभज्जंति ।
संकलिए वोगसिए जं चास्सउं सेसयं होइ ॥
- [३] जत्तियमित्ते दिवसे जत्तिय राई मुहुत्तं ऊसासे ।
गब्भंमि वसइ जीवो आहारविहिं च वोच्छामि ॥
- [४] दोन्नि अहोरत्तसए संपुण्णे सत्तसत्तरिं चेव ।
गब्भंमि वसइ जीवो अद्धमहोरत्तमन्नं च ॥
- [५] एए उ अहोरत्ता नियमा जीवस्स गब्भवासंमि ।
हीनाऽहिया उ इत्तो उवघायवसेण जायंति ॥
- [६] अट्ठ सहस्सा तिन्नि उ सया मुहुत्ताण पण्णवीसा य ।
गब्भगओ वसइ जीवो नियमा हीनाऽहिया इत्तो ॥
- [७] तिन्नेव य कोडीओ चउद्दस य हवंति सयसहस्साइं ।
दस चेव सहस्साइं दोन्नि सया पन्नवीसा य ॥
- [८] उस्सासा निस्सासा एत्तियमिता हवंति संकलिया ।
जीवस्स गब्भवासे नियमा हीनाऽहिआ इत्तो ॥
- [९] आउसो ! इत्थीए नाभिहिट्ठा सिरादुगं पुप्फनालियागारं ।
तस्स य हिट्ठा जोणी अहोमुहा संठिया कोसा ॥
- [१०] तस्स य हिट्ठा चूयस्स मंजरी तारिसा उ मंसस्स ।
ते रिउकाले फुडिया सोणियलवया विमुंचंति ॥
- [११] कोसायारं जोणीं संपत्ता सुक्कमीसिया जइया ।
तइया जीवुववाए जोग्गा भणिया जिणिंदेहिं ॥
- [१२] बारस चेव मुहुत्ता उवरिं विद्धंस गच्छई सा उ ।
जीवाणं परिसंखा लक्खपुहुत्तं च उक्कोसा ॥
- [१३] पणपन्नाय परेणं जोणी पमिलायए महिलियाणं ।
पणसत्तरीय परओ पाएण पुमं भवेऽबीओ ॥
- [१४] वाससयाउयमेयं परेण जा होइ पुव्वकोडीओ ।
तस्सऽद्धे अमिलाया सव्वाउयवीसभागो उ ॥
- [१५] रत्तुककडा य इत्थी लक्खपुहुत्तं च बारस मुहुत्ता ।
पिउसंख सयपुहुत्तं बारस वासा उ गब्भस्स ॥

[१६] दाहिणकुच्छी पुरिसस्स होइ वामा उ इत्थियाए उ ।

उभयंतरं नपुंसं तिरिए अट्ठेव वरिसाइं ॥

[१७] इमो खलु जीवो अम्मा-पिउसंयोगे माऊओयं पिउसुक्कं तं तदुभय-संसट्ठं कलुसं किब्बिसं तप्पढमयाए आहारं आहारिता गब्भत्ताए वक्कमइ ।

[१८] सत्ताहं कललं होइ, सत्ताहं होइ अब्बुयं ।

अब्बुया जायए पेसी, पेसीओ वि घनं भवे ॥

[१९] तो पढमे मासे करिसूणं पलं जायइ, बीए मासे पेसी संजायए घना, तईए मासे माउए डोहलं जणेइ, चउत्थे मासे माऊए अंगाइं पीणेइ, पंचमे मासे पंच पिंडियाओ पाणिं पायं सिरं चेव निव्वत्तेइ, छट्ठे मासे पित्तसोणियं उवचिणेइ, सत्तमे मासे सत्त सिरासयाइं पंच पेसीसयाइं नव धमनीओ नवनउयं च रोमकूवसयसहस्साइं ९९,००,००० निव्वत्तेइ, विना केसमंसुणा अद्दुट्ठाओ रोमकूवकोडीउ रू, २५०,००,००० निव्वत्तेइ, अट्ठमे मासे वितीकप्पो हवइ ।

[२०] जीवस्स णं भंते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारैइ वा पासवणेइ वा खलेइ वा सिंधाणेइ वा वावंतेइ वा पित्तइ वा सुक्केइ वा सोणिएइं वा ? नो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवस्स णं गब्भगयस्स समाणस्स नत्थि उच्चारै इ वा जाव सोणिए इ वा ?,

गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जं आहारमाहारेइ तं चिणाइ सोइंदियत्ताए चक्खुं घाणिंदिं जिब्बिं फासिं अट्ठिअट्ठिमिंजकेसमंसुरोमनहत्ताए, से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जीवस्स णं गब्भगयस्स समाणस्स नत्थि उच्चारैइ वा जाव सोणिएइ वा ।

[२१] जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे प्हू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ?, गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवे णं गब्भगए समाणे नो प्हू मुहेणं कावलियं आहारं आहारित्तए ?,

गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ सव्वओ परिणामेइ सव्वओ ऊससइ सव्वओ नीससइ अभिक्खणं आहारेइ जाव अभिक्खणं नीससइ, आहच्च आहारेइ जाव आहच्च निस्ससइ, से माउजीवरसहरणी पुतजीवरसहरणी, माउजीवपडिबद्धा पुतजीवंपुडा, तम्हा आहारेइ तम्हा परिणामेइ, अवराऽवि य णं पुतजीवपडिबद्धा माउजीवपुडा तम्हा चिणाइ तम्हा उवचिणाइ, से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, जीवे णं गब्भगए समाणे नो प्हू मुहेणं कावलियं आहारे आहारित्तए ।

[२२] जीवे णं भंते! गब्भगए समाणे किमाहारं आहारेइ ?, गोयमा ! जं से माया नानाविहाओ रसविगईओ तित्तकडुअकसायंबिलमहुराइं दव्वाइं आहारेइ तओ एगदेसेणं ओयमाहारेइ, तस्स फलबिंसरिसा उप्पलनालोवमा भवइ नाभी, रसहरणी जननीए सयाइ नाभीए पडिबद्धा नाभीए, तीए गब्भो ओयं आइयइ, अण्हयंतीए आयाए, तीए गब्भोऽवि विवड्ढइ जाव जाउ ति ।

[२३] कइ णं भंते ! माउअंगा पन्नत्ता ?, गोयमा ! तओ माउअंगा पं० तंजहा-मंसे सोणिए मत्थुलुंगे, कइ णं भंते ! पिउअंगा पन्नत्ता ?, गोयमा ! तओ पिउअंगा पं० तंजहा-अट्ठिं अट्ठिमिंजा केसमंसुरोमनहा ।

[२४] जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे नरएसु उववज्जिज्जा ?, गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नो उववज्जिज्जा, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीवे णं गब्भगए समाणे

नरएसु अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नो उववज्जिज्जा ?, गोयमा !

जे णं जीवे गब्भगए समाणे सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जतीहिं पज्जतए वीरियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वेउच्चिअलद्धीए, वेउच्चिअलद्धिपत्ते पराणीअं आगयं सुच्चा निसम्म पएसे निच्छूहइ ता वेउच्चियसमुग्घाएणं समोहणइ ता चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेइ ता पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ, से णं जीवे अत्थकामए रज्ज० भोग० काम० अत्थकंखिए रज्ज० भोग० काम० अत्तपिवासिए रज्ज० भोग० काम० तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि च णं अंतरंसि कालं करिज्जा नेरइएसु उववज्जिज्जा,

से एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ गो० ! जीवे णं गब्भगए समाणे नेरइएसु अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नो उववज्जिज्जा ।

[२५] जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे देवलोएसु उववज्जिज्जा ?, गो० ! अत्थेगइए उवव० अत्थे० नो उवव०, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थे० जाव नो उवव० ?,

गो० ! जे णं जीवे गब्भगए समाणे सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जतीहिं पज्जतए विउच्चियलद्धीए वीरियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सुच्चा निसम्म तओ से भवइ तिव्वसंवेगसंजायसइठे तिव्वधम्मनुरायरत्ते, से णं जीवे धम्मकामए पुण्ण० सग्ग० मुख्ख० धम्मकंखिए पुन्न० सग्ग० मुख्ख० धम्मपिवासिए पुन्न० सग्ग० मुख्ख०, तच्चित्ते जाव तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं करिज्जा देवलोएसु उववज्जिज्जा,

से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ अत्थेगइए उववज्जिज्जा अत्थेगइए नो उववज्जिज्जा ।

[२६] जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे उताणए वा पासिल्लए अंबखुज्जए वा अच्छिज्ज वा चिट्ठिज्ज वा निसीइज्ज वा तुयट्ठिज्ज वा आसइज्ज वा सइज्ज वा माऊए सुयमाणीए सुयइ जागरमाणीए जागरइ सुहिआए सुहिओ भवइ दुहिआए दुहिओ भवइ ?, हंता गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे उताणए वा जाव दुक्खिआए दुक्खिओ भवइ ।

[२७] थिरजायंपि हु रक्खइ सम्मं सारक्खई तओ जननी ।

संवाहई तुयट्ठई रक्खइ गब्भं च अप्पं च

॥

[२८] अनुसुयइ सुयंतीए जागरमाणीए जागरइ गब्भो ।

सुहियाए होइ सुहिओ दुहिआए दुक्खिओ होइ ॥

[२९] उच्चारे पासवणे खेले सिंघाणओऽवि से नत्थि ।

अट्ठि-मिंज-नह-केस-मंसु-रोमेसु परिणामो ॥

[३०] आहारो परिणामो उस्सासे तह य चेव नीसासो ।

सव्वपएसेसु भवई कवलाहारो य से नत्थि ॥

[३१] एवं बौदिमइगओ गब्भे संवसइ दुक्खिओ जीवो ।

परमतमिसंघयारे अमेज्झभरिए पएसंमि ॥

[३२] आउसो ! तओ नवमे मासे तीए वा पडुप्पन्ने वा अनागए वा चउण्हं माया अन्नयरं पयायइ, तंजहा इत्थिं वा इत्थिरूवेणं, पुरिसं वा पुरिसरूवेणं, नपुंसगं वा नपुंसगरूवेणं, बिंबं वा बिंबरूवेण ।

- [३३] अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थीया तत्थ जायई ।
अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ जायइ ॥
- [३४] दोण्हं पि रत्त-सुक्काणं, तुल्लभावे नपुंसओ ।
इत्थी-ओय-समाओगे, बिंबं तत्थ जायइ ।
- [३५] अहव णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा आगच्छइ समागच्छइ,
तिरियमागच्छइ विनिघायमावज्जइ ।
- [३६] कोई पुण पावकारी बारस संवच्छराइं उक्कोसं ।
अच्छइ उ गब्भवासे असुइप्पभवे असुइयंमि ॥
- [३७] जायमाणस्स जं दुक्खं, मरमाणस्स वा पुणो ।
तेन दुक्खेण संमूढो, जाइं सरइ नऽप्पणो ॥
- [३८] विस्सरसरं रसंतोजो सो जोणीमुहाउ निप्फिडइ ।
माऊए अप्पणोऽवि य वेयणमउलं जणेमाणो ॥
- [३९] गब्भघरयम्मि जीवो कुंभीपागम्मि नरयसंकासे ।
वुच्छो अमेज्झमज्झे असुइप्पभवे असुइयंमि ॥
- [४०] पितस्स य सिंभस्स य सुक्कस्स य सोणियस्स चिय मज्झे ।
मुत्तस्स पुरीसस्स य जायइ जह वच्चकिमिउ व्व ॥
- [४१] तं दाणि सोयकरणं केरिसयं होइ तस्स जीवस्स ? ।
सुक्करूहिरागराओ जस्सुप्पती सरीरस्स ॥
- [४२] एयारिसे सरीरे कलमलभरिए अमेज्झसंभूए ।
निययं विगणिज्जंतं सोयमयं केरिसं तस्स ? ॥
- [४३] आउसो! एवं जायस्स जंतुस्स कमेण दस दसाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा --
- [४४] बाला किड्डा मंदा बला य पन्ना य हायणि पवंचा ।
पब्भारा मुम्मुही सायणी य दसमा य कालदसा ॥
- [४५] जायमित्तस्स जंतुस्स, जा सा पढमिया दसा ।
न तत्थ सुहं दुक्खं वा, बहुं जाणंति बालया ॥
- [४६] बिइयं च दसं पत्तो, नानाकीडाहिं कीडई ।
न य से कामभोगेसु, तिव्वा उप्पज्जई रई ॥
- [४७] तइयं च दसं पत्तो, पंच कामगुणे नरो ।
समत्थो भुंजिउं भोए, जइ से अत्थि घरे धुवा ॥
- [४८] चउत्थी उ बलानाम, जं नरो दसमस्सिओ ।
समत्थो बलं दरिसेउं, जइ सो भवे निरुवद्दवो ॥
- [४९] पंचमी तु दसं पत्तो, आनुपुव्वीए जो नरो ।
समत्थोऽत्थं विचिंतेउ, कुडुंबं चाभिगच्छइ ॥

- [५०] छट्ठी उ हायणी नामा जं नरो दसमस्सिओ ।
विरज्जई अ कामेसु, इंदिएसु य हायई ॥
- [५१] सत्तमी य पवंचा उ, जं नरो दसमस्सिओ ।
निच्छुभइ चिक्कणं खेलं, खासई य खणे खणे ॥
- [५२] संकुइय वलीचम्मो, संपत्तो अट्ठमिं दसं ।
नारीणं च अनिट्ठो य, जराए परिणामिओ ॥
- [५३] नवमी मुम्महीनामं, जं नरो दसमस्सिओ ।
जराघरे विनस्संते, जीवो वसइ अकामओ ॥
- [५४] हीनभिन्नसरो दीनो, विवरीओ विचित्तओ ।
दुब्बलो दुक्खिओ सुयइ, संपत्तो दसमिं दसं ॥
- [५५] दसगस्स उवक्खेवो वीसइवरिसा उ गिण्हई विज्जं ।
भोगा य तीसगस्स य चत्तालीसस्स य विन्नाणं ॥
- [५६] पन्नासयस्स चक्खु हायइ सट्ठिक्कयस्स बाहुबलं ।
भोगा य सत्तरिस्स य असीइगस्सा य विन्नाणं ॥
- [५७] नउई नमइ सरीरं वाससए जीविअं चयइ ।
कित्तिओऽत्थ सुहो भागो दुहभागो य कित्तिओ ? ॥
- [५८] जो वाससयं जीवइ, सुही भोगे य भुंजई ।
तस्सावि सेविअं सेओ, धम्मो य जिनदेसिओ ॥
- [५९] किं पुन सपच्चवाए, जो नरो निच्चदुक्खिओ ।
सुट्ठुयरं तेन कायव्वो, धम्मो य जिनदेसिओ ॥
- [६०] नंदमाणो चरे धम्मं, वरं मे लट्ठतरं भवे ।
अनंदमाणो वि चरेधम्मं, मा मे पावतरं भवे ॥
- [६१] न वि जाई कुलं वा वि, विज्जा वा वि सुसिक्खिया ।
तारे नरं व नारिं वा, सव्वं पुण्णेहिं वइढई ॥
- [६२] पुण्णेहिं हायमाणेहिं, पुरिसगारोऽवि हायई ।
पुण्णेहिं वइढमाणेहिं, पुरिसगारोऽवि वइढइ ॥

[६३] पुण्णाइं खलु आउसो ! किच्चाइं करणिज्जाइं पीइकराइं वण्णकराइं धनकराइं कित्तिकराइं,
नो य खलु आउसो ! एवं चिंतेयव्वं, एसंति खलु बहवे समया आवलिया खणा आणापाणू थोवा लवा मुहता
दिवसा अहोरत्ता पक्खा मासा रिऊ अयना संवच्छरा जुगा वाससया वाससहस्सा वाससयसहस्सा वासकोडीओ
वासकोडाकोडीओ -

जत्थ णं अम्हे बहूइं सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं
पडिवज्जिस्सामो पट्ठविस्सामो करिस्सामो, ता किमत्थं आउसो ! नो एवं चिंतेयव्वं भवइ ?, अंतराय बहुले अयं
जीविए, इमे य बहवे वाइय-पित्तिअ-सिंभिय-सन्निवाइया विविहा रोगायंका फुसंति जीवियं ।

[६४] आसी य खलु आउसो ! पुत्विं मनुया ववगयरोगाऽऽयंका बहुवाससयसहस्स जीविणो, तंजहा-जुयलधम्मिआ अरिहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा, ते णं मनुया अनतिवरसोम चारुरूवा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा सुजायसव्वंगसुंदरंगा रत्तुप्पल पउमकरचरण कोमलं-गुलितला नग-नगर-मगर-सागर-चक्कंकरंधरंकर लक्खणं कियतला सुपइट्ठिय कुम्मचारु चलणा आनुपुत्विं सुजाय-पीवरं-गुलिआ उन्नयतनुतंबनिद्धनहा संठिअ सुसिलिट्ठगुढगुप्फा एणी कुरुविंदावत्त वट्टाणु-पुत्विज्जंघा समुग्गनिम्मग्गगूढजानू गयससण सुजाय संनिभोरु वरवारणमत्त तुल्लविक्कम विलासियगई सुजायवरतुरयगुज्झदेसा आइन्नहय व्व निरुवलेवा पमुइअ वर तुरंग सीहअइरेग वट्टियकडी साहयसोणंद-मुसलदप्पण निगरियवर-कनगच्छरुसरिस वरवइरवलियमज्झा,

-गंगावत्तपयाहिणावत्ततरंग-भंगुर-रविकिरण-तरुणबोहिय-उक्कोसायंत-पउम-गंभीर वि- यडनाभी उज्जुय-समसहिय-सुजाय-जच्चतणु-कसिण-निद्धयाइज्ज-लडह-सुकुमाल-मउय-रमणिज्ज-रोमराई झस-विहग-सुजाय-पीनकुच्छी झसोयरा पम्हवियडनाभा संगयपासा सन्नयपासा सुंदरपासा सुजायपासा मिअमाइय-पीण-रइयपासा अकरंडुय-कनय-रुयग-निम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी पसत्थ-बत्तीसलक्खण धरा कनगसिलायलुज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिअ-वित्थिन्नपिहुलवच्छा सिरिवच्छं कियवच्छा पुरवरफलिह वट्टियभुया भुयगीसर-विउलभोग-आयाण-फलिह-उच्छूढदीहबाहु जुगसन्निभपीण-रइअ-पीवरपउट्ठा संठिय-उवचिय-घन-थिर-सुबद्ध-सुवट्ट-सुसिलिट्ठ पव्वसंधी रत्तलोवचिय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खणपसत्थ-अच्छिद्धजालपाणी पीवर-वट्टिय-सुजाय-कोमलवरंगुलिआ तंब-तलिण-सुइ-रूइर-निद्धनक्खा

-चंदपाणिलेहा सूर० संख० चक्क० सोत्थिअ० ससि-रवि-संख-चक्क-सोत्थिय-सुविभत्त-सुविरइय-पाणिलेहा वरमहिस-वराह-सीहसद्धल-उसभ-नागवरविउल-पडिपुन्नउन्नय तमक्खंधा चउरंगुल-सुप्पमाण-कंबुवरसरिसगीवा अवट्ठिअ-सुविभत्त-चित्तमंसू मंसल-संठिय-पसत्थ-सद्धलविउलहनुया ओयविय-सिलप्पवाल-बिबफल-सन्निभाधरूट्ठा पंडुर-ससिसगल-विमल-निम्मल-संख-गोक्खीर-कुंद-दग रय-मुणालिया-धवल-दंतसेढी अखंडदंता अफुडिय० अविरल० सुनिद्ध० सुजाय० एगदंतसेढीविव अनेगदंता हुयवहा निद्धंत-धोय-तत्ततवणिज्ज-रत्ततलतालु-जीहा सारस-नवथणिय-महर-गंभीर-कुंचनिग्घोस-दुदुंहिसरा गरूलायय-उज्जु-तुंगनासा अवदारिअ-पुंडरीयवयणा कोकासिय-धवल-पुंडरीय-पत्तलच्छा आनामिअ चावरूइल-किण्ह-चिहुराइ-सुसंठिय-संगय-आयय-सुजाय-भुमया अल्लीण-पमाणजुत्त-सवणा सुसवणा पीण-मंसल-कवोल-देसभागा अइरूग्गय-समग्ग-सुनिद्ध-चंदद्ध-संठिअनिडाला उडुवइ-पडिपुन्न-सोमवयणा छतागारुत्तमंगदेसा घन-निचिय-सुबद्ध-लक्खणुन्नय-कूडागारनिभ निरुवमपिंडियग्गसिरा हुयवह-निद्धंत-धोय-तत्ततवणिज्ज-केसंत-केसभूमि सामलीबौडघन-निचिअ-च्छोडिअ-मिउ-विसय-सुहुम-लक्खण-पसत्थ-सुगंधि-सुंदर-भुयमोयग-भिंंग-नील-कज्जल-पहट्ठ-भमरण-निद्धनिउरंब-निचिय-कुंचिअ-पयाहिणावत्त मुद्धसिरया लक्खणवंजणगुणोववेया मानुम्मानपमाणपडिपुन्न-सुजाय-सव्वंग-सुंदरंगा ससिसोमागारा कंता पियदंसणा सब्भाव सिंगार चारुरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

ते णं मनुया ओहस्सरा मेह० हंस० कौच० नदिं० नदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा मंजुसरा मंजुघोसा सुस्सरा सूसरघोसा अनुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कवोयपरिणामा सउणीफोस-पिट्ठंतरोरु परिणया पउमुप्पल सुगंधि सरिस नीसासा सुरभिवयणा छवी निरायंका उत्तम-पसत्थाइसेस-निरुवमतनू जल्लमल-कलंक-सेय रय-दोसवज्जियसरीरा निरुवलेवा छाया-उज्जोवियंगमंगा वज्जरिसह-नाराय संघयणा समचउरंस-संठाणसंठिया छधनुसहस्साइं उइढं उच्चतेणं पं०,

ते णं मनुया दो छप्पन्नगपिट्ठ-करंडगसया पं० समणाउसो ! ते णं मनुया पगइभद्वया पगइविनीया पगइउवसंता पगइपयणु-कोहमानमायालोभा मिउ मद्व संपन्ना अल्लीणा भद्वया विनीया अप्पिच्छा असन्निहिसंचया अचंडा असि मसि किसि-वाणिज्ज विवज्जिया विडिमंतर निवासिणो इच्छिय काम-कामिणो गेहागार-रुक्खकय-निलया पुढवी-पुप्फ-फलाहारा ते णं मनुयगणा पन्नता ।

[६५] आसी य समणाउसो! पुट्ठिं मनुयाणं छत्विहे संघयणे, तंजहा- वज्जरिसह-नारायसंघयणे रिसहनाराय० नाराय० अद्धनाराय० कीलिया० छेवट्ठसंघयणे, संपइ खलु आउसो ! मनुयाणं छेवट्ठसंघयणे वट्ठइ, आसी य आउसो ! पुट्ठिं मनुयाणं छत्विहे संठाणे, तं०-समचउरंसे नग्गोहपरिमंडले सादि खुज्जे वामने हुंडे, संपइ खलु आउसो ! मनुयाणं हुंडे संठाणे वट्ठइ ।

[६६] संघयणं संठाणं उच्चतं आउयं च मनुयाणं ।

अनुसमयं परिहायइ ओसप्पिणि-काल-दोसेणं ॥

[६७] कोह-मय-माय-लोभा, उस्सन्नं वड्ढए य मनुयाणं ।

कूडतुला कुडमाना, तेनऽनुमानेन सव्वंति ॥

[६८] विसमा अज्ज तुलाओ विसमाणि य जनवएसु मानानि ।

विसमा रायकुलाइं तेन उ विसमाइं वासाइं ॥

[६९] विसमेसु य वासेसुं हुंति असाराइं ओसहिबलाइं ।

ओसहि-दुब्बल्लेण य आउं परिहायइ नराणं ॥

[७०] एवं परिहायमाणे लोए चंदु व्व कालपक्खंमि ।

जे धम्मिया मनूसा सुजीवियं जीवियं तेसिं ॥

[७१] आउसो ! से जहानामए केइ पुरिसे ण्हाए कयबलिकम्मए कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसि ण्हाए कंठेमालाकडे आविद्धमणि-सुवण्णे अहअ-सुमहग्घ-वत्थ-परिहिए चंदणोक्किण्ण-गायसरीरे सरससुरहि गंधो-गोसीसचंदनानुलित्तगत्ते सुइमाला-वन्नग-विलेवणे कप्पियहारऽद्धहारतिसरय-पालंबपलंबमाणे कडिसुत्तय-सुकयसोहे पिणिद्धगेविज्जे अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललियकयाभरणे नानामणि-कनग-रयण-कडग-तुडिय-थंभियभुए अहिअरूवे सस्सिरीए कुंडलुज्जोवियानने मउडदित्तसिरए हारुच्छय-सुकय-रइयवच्छे पालंबपलंबमाण-सुकयपड-उत्तरिज्जे मुद्धियापिंगुलंगुलिए नानामणि-कनग-रयण-विमल-महरिह-निउणो-विय-मिसिमिसिंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-आविद्ध-वीरवलए किं बहुणा ? कप्परुक्खोविव चेव अलंकिय-विभूसिए सुइपए भविता अम्मापियरो अभिवादएज्जा ।

तए णं तं पुरिसं अम्मापियरो एवं वएज्जा - जीव पुत्ता ! वाससयं ति, तंपि आउं तस्स नो बहुयं भवइ, कम्हा ?, वाससयं जीवंतो वीसं जुगाइं जीवइ, वीसं जुगाइं जीवंतो दो अयनसयाइं जीवइ, दो अयनसयाइं जीवंतो छ उऊसयाइं जीवइ, छ उऊसयाइं जीवंतो बारस माससयाइं जीवइ, बारसं माससयाइं जीवंतो चउवीसं पक्खसयाइं जीवइ, चउवीसं पक्खसयाइं जीवंतो छतीसं राइंदियसहस्साइं जीवइ, छतीसं राइंदियसहस्साइं जीवंतो दस असीयाइं मुहुत्तसयसहस्साइं जीवइ, दसअसीयाइं मुहुत्तसयसह-स्साइं जीवंतो चत्तारि य ऊसासकोडिसए सत्त य कोडीओ अडयालीसं च सयसहस्साइं चत्तालीसं च ऊसाससहस्साइं जीवइ, चत्तारि य ऊसासकोडिसए जाव चत्तालीसं च ऊसाससहस्साइं जीवंतो अद्धतेवीसं तंदुलवाहे भुंजइ, कहमाउसो ! अद्धतेवीसं तंदुलवाहे भुंजइ ?

गोयमा! दुब्बलाए खंडियाणं बलियाए छडियाणं खडरमुसल-पच्चाहयाणं ववगयतुस कणियाणं अखंडाणं अफुडियाणं फलगसरियाणं इक्किक्कबीयाणं अद्धतेरसपलियाणं पत्थए, सेऽविय णं पत्थए मागहए, कल्लं पत्थे सायं पत्थो, चउसट्ठितंदुलसाहस्सीओ मागहओ पत्थो, बिसाहस्सिएणं कवलेणं बतीसं कवला पुरिसस्स आहारो अट्ठावीसं इत्थियाए चउवीसं पंडगस्स ।

एवामेव आउसो ! एयाए गणणाए दो असईओ पसई, दो पसईओ य सेइया होइ, चत्तारि सेइया कुलओ, चत्तारि कुलया पत्थो, चत्तारि पत्थगा आढगं, सट्ठिए आढगाणं जहन्नए कुंभे, असीईए आढयाणं मज्झिमे कुंभे, आढगसयं उक्कोसए० अट्ठेव आढगसयाणि वाहे, एएणं वाहप्पमाणेणं अद्धतेवीसं तंदुलवाहे भुंजइ, ते य गणिय निद्धिट्ठा ।

[७२] चत्तारि य कोडिसया सट्ठिं चेव य हवंति कोडीओ ।

असीइं च तंदुलसयसहस्साणि हवंति ति-मक्खायं ॥

[७३] तं एवं अद्धतेवीसं तंदुलवाहे भुंजंतो अद्धछट्ठे मुग्गकुंभे भुंजइ, अद्धछट्ठे मुग्गकुंभे भुंजंतो चउवीसं नेहाढगसयाइं भुंजइ, चउवीसं नेहाढग-सयाइं भुंजंतो छत्तीसं लवणपलसहस्साइं भुंजइ, छत्तीसं लवणपलसहस्साइं भुंजंतो छप्पडसाडगसयाइं नियंसेइ दोमासिएणं परिअट्टएणं, मासिएण वा परियट्टेणं बारस पडसाडगसयाइं नियंसेइ, एवामेव आउसो ! वाससयाउयस्स सत्त्वं गणियं तुलियं मवियं नेह-लवण-भोयणऽच्छायणं पि, एयं गणियप्पमाणं दुविहं भणियं महरिसीहिं, जस्सऽत्थि तस्स गणिज्जइ, जस्स नत्थि तस्स किं गणिज्जइ ? ।

[७४] ववहारगणियदिट्ठं सुहुमं निच्छयगयं मुणेयत्त्वं ।

जइ एयं न वि एयं विसमा गणणा मुणेयत्त्वा ॥

[७५] कालो परमनिरुद्धो अविभज्जो तं तु जाण समयं तु ।

समया य असंखिज्जा हवंति उस्सासनिस्सासे ॥

[७६] हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुक्किट्ठस्स जंतुणो ।

एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणु ति वुच्चइ ॥

[७७] सत्त पाणूणि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे ।

लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्ते वियाहिए ॥

[७८] एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवइया ऊसासा वियाहिया

?, गोयमा !

[७९] तिन्नि सहस्सा सत्त य सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा ।

एस मुहुत्तो भणिओ सत्त्वेहिं अनंतनाणीहिं ॥

[८०] दो नालिया मुहुत्तो सट्ठिं पुण नालिया अहोरत्तो ।

पन्नरस अहोरत्ता पक्खो पक्खा दुवे मासो ॥

[८१] दाडिमपुप्फागारा लोहमई नालिआ उ कायत्त्वा ।

तीसे तलम्मि छिद्धं छिद्धपमाणं पुणो वोच्छं ॥

[८२] छन्नउई पुच्छवाला तिवासजायाए गोति-हानीए ।

अस्संवलिया उज्जुय नायत्त्वं नालियाछिद्धं ॥

- [८३] अहवा उ पुच्छवाला दुवासजायाए गयकरेणूए ।
दो वाला उ अभग्गा नायव्वंनलियाछिद्धं ॥
- [८४] अहवा सुवण्णमासा चत्तारि सुवट्टिया घना सूई ।
चउरंगुलप्पमाणा नायव्वं नलियाछिद्धं ॥
- [८५] उदगस्स नलियाए भवंति दो आढया उ परिमाणं ।
उदगं च भाणियव्वं जारिसयं तं पुणो वुच्छं ॥
- [८६] उदगं खलु नायव्वं कायव्वं दूसपट्ट-परिपूयं ।
मेहोदगं पसन्नं सारइयं वा गिरिनईए ॥
- [८७] बारस मासा संवच्छरो उ पक्खा य ते उ चउवीसं ।
तिन्नेव य सट्ठिसया हवंति राइंदियाणं च ॥
- [८८] एगं च सयसहस्सं तेरस चेव य भवे सहस्साइं ।
एगं च सयं नउयं हवंति अहोरत्त-ऊसासा ॥
- [८९] तितीसा सयसहस्सा पंचानऊई भवे सहस्साइं ।
सत्त य सया अनूना हवंति मासेण ऊसासा ॥
- [९०] चत्तारि य कोडीओ सत्तेव य हुंति सयसहस्साइं ।
अडयालीससहस्सा चत्तारि सया य वरिसेणं ॥
- [९१] चत्तारि य कोडीसया सत्त य कोडीओ हुंति अवरओ ।
अडयाल सयसहस्सा चत्तालीसं सहस्सा य ॥
- [९२] वाससयाउस्सेए उस्सासा एतिया मुणेयव्वा ।
पिच्छह आउस्स खयं अहोनिंसं झिज्झमाणस्स ॥
- [९३] राइंदिएण तीसं तु मुहुत्ता नव सया उ मासेणं ।
हायंति पमत्ताणं न य णं अबुहा वियाणंति ॥
- [९४] तिन्नि सहस्से सगले छच्च सए उडुवरो हरइ आउं ।
हेमंते गिम्हासु य वासासु य होइ नायव्वं ॥
- [९५] वाससयं परमाउं एत्तो पन्नास हरइ निद्दाए ।
एत्तो वीसइ हायइ बालत्ते वुड्ढभावे य ॥
- [९६] सी-उण्ह-पंथगमणे खुहा पिवासा भयं च सोगे य ।
नानाविहा य रोगा हवंति तीसाइ पच्छद्धे ॥
- [९७] एवं पंचासीई नट्ठा पन्नरसमेव जीवंति ।
जे हुंति वाससइया न य सुलहा वाससयजीवा ॥
- [९८] एवं निस्सारे मानुसत्तणे जीविए अहिवडंते ।
न करेह चरणधम्मं पच्छा पच्छाणुत्तपिहिह ॥
- [९९] घुट्ठम्मि सयं मोहे जिनेहिं वरधम्मतित्थमग्गस्स ।
अत्ताणं च न याणह इह जाया कम्मभूमिए ॥

[१००] नइवेगसमं चवलं जीवियं जोव्वणं च कुसुमसमं ।

सुक्खं च जमनियतं तिन्नि वि तुरमाण-भुज्जाइं

॥

[१०१] एयं खु जरामरणं परिक्खिवई वग्गुरा व मियजूहं ।

न य णं पिच्छह पत्तं संमूढा मोहजालेणं ॥

[१०२] आउसो! जं पि इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं मनाभिरामं थेज्जं वेसासियं

समयं बहुमयं अनुमयं भंडकरंडगसमाणं रयणकरंडओ विव सुसंगोवियं चेलपेडाविव सुसंपरिवुडं तिल्लपेडा विव सुसंगोवियं मा णं उण्हं मा णं सीयं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं चोरा मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-संनिवाइया विविहा रोगायंका फुसंतु ति कट्टु एवं पि याइं अधुवं अनिययं असासयं चयावचइयं विप्पनासधम्मं पच्छा व पुरा व अवस्स विप्पचइयव्वं, -

एयस्स वि याइं आउसो ! अनुपुव्वेणं अट्ठारस य पिट्ठकरंडग संधीओ बारस पंसुलिकरंडया छप्पंसुलिए कडाहे बिहत्थया कुच्छी चउरंगुलिया गीवा चउपलिया जिब्भा दुपलियाणि अच्छीणि चउक्कवालं सिंरं बतीसं दंता सत्तंगुलिया जीहा अद्धुट्ठपलियं हिययं पणवीसं पलाइं कालेज्जं, दो अंता पंचवामा पं० तं० - थूलंते य तनुअंते य, तत्थ णं जे से थूलंते तेणं उच्चारे परिणमइ, तत्थ णं जे से तणुयंते तेणं पासवणे परिणमइ, दो पासा पं० तं० - वामे पासे दाहिणे पासे य, तत्थ णं जे से वामे पासे से सुहपरिणामे, तत्थ णं जे से दाहिणे पासे से दुहपरिणामे, -

आउसो ! इमंमि सरीरए सट्ठिं संधिसयं सत्तुतरं मम्मसयं तिन्नि अट्ठिदामसयाइं नव ण्हारूयसयाइं सत्त सिरासयाइं सत्तुतरं पंच पेसीसयाइं नव धमनीओ नवनउइं च रोमकूव सयहस्साइं विना केसमंसुणा, सह केसमंसुणा अद्धुट्ठाओ रोमकूवकोडीओ, -

आउसो ! इमंमि सरीरए सट्ठिं सिरासयं नाभिप्पभवाणं उइढगामिणीणं सिरमुवगयाणं जाओ रसहरणीओ ति वुच्चंति, जाणं सि निरूवघातेणं चक्खु-सोय-घाण-जीहाबलं च भवइ, जाणं सि उवघाएणं चक्खु-सोय-घाण-जीहाबलं उवहम्मइ, -

आउसो ! इमंमि सरीरए सट्ठिं सिरासयं नाभिप्पभवाणं अहोगामिणीणं पायतलमुवगयाणं जाणं सि निरूवघाएणं जंघाबलं हवइ, ता से उवघाएणं सीसवेयणा अद्धसीसवेयणा मत्थयसूले अच्छीणि अंधिज्जंति,

आउसो ! इमंमि सरीरए सट्ठिं सिरासयं नाभिप्पभवाणं तिरियगामिणीणं हत्थतलमुवगयाणं जाणं सि निरूवघाएणं बाहबलं हवइ, तेणं चेव से उवघाएणं पासवेयणा पोट्टवेयणा पुट्ठिठवेयणा कुच्छिवेयणा कुच्छिसूले भवइ,

आउसो ! इमस्स जंतुस्स सट्ठिं सिरासयं नाभिप्पभवाणं अहोगामिणीणं गुदपविट्ठाणं, जाणं सि निरूवघाएणं मुत्त-पुरीस-वाउकम्मं पवत्तइ, ताणं चेव उवघाएणं मुत्त-पुरीस-वाउनिरोहेणं अरिसाओ खुब्भंति पंडुरोगो भवइ, आउसो !

इमस्स जंतुस्स पणवीसं सिराओ पित्तधारिणीओ, पणवीसंसिराओ सिंभधारिणीओ दस सिराउ सुक्कधारिणीओ, सत्त सिरासयाइं पुरिसस्स तीसूणाइं इत्थीयाए वीसूणाइं पंडगस्स,

आउसो ! इमस्स जंतुस्स रूहिरस्स आढयं वसाए अद्धाढयं मत्थुलिंगस्स पत्थो मुत्तस्स आढयं पुरीसस्स पत्थो पित्तस्स कुलवो सिंभस्स कुलवो सुक्कस्स अद्धकुडवो, जं जाहे दुट्ठं भवइ तं ताहे अइप्पमाणं भवइ, पंचकोट्ठे पुरिसे छक्कोट्ठा इत्थिया, नवसोए पुरिसे इक्कारससोया इत्थिया, पंच पेसीसयाइं

पुरिसस्स तीसूणाइं इत्थियाए वीसूणाइं पंडगस्स ।

[१०३] अब्भंतरंसि कुणिमं जो परियत्तेउ बाहिरं कुज्जा ।

तं असुई दट्ठणं सया वि जननी दुगुंछिज्जा ॥

[१०४] मानुस्सयं सरीरं पूईयं मंस-सुक्क-हड्डेणं ।

परिसंठवियं सोहइ अच्छायण-गंध-मल्लेणं ॥

[१०५] इमं चेव य सरीरं सासघडीमेय-मज्जमंस-ट्ठियसमत्थुलिंग-सोणिअ-वालुंडय-चम्मकोस-नासिय-सिंघाणय-धीमलालयं अमणुण्णगं सीसघडीभंजियं गलंतनयनं-कण्णोट्ठ-गंड-तालुयं अवालुया-खिल्लचिक्कणं चिलचिलयं दंतमलमइलं बीभत्थदरिसणिज्जं अंसुलग-बाहुलग-अंगुलीयंगुट्ठग-नह-संधि-संघाय-संधियमिणं बहुरसिआगारं नाल-खंध-च्छिरा-अनेगणहारू-बहुधमनि-संधिबद्धं पागडउदर-कवालं कक्खनिक्खुंडं कक्खगकलिअं दुरंतं अट्ठि-धमनिसंताणसंतयं सव्वओ समंता परिसवंतं च रोमकूवेहिं सयं असुइं सभावओ परमदुब्धिगंधि कालिज्जय-अंत-पित्त-जरहिययफोफसफेफस-पिलिहोदर-गुज्झकुणिम-नवच्छिड्ड-थिविथिविय-थिवित्त हिययं दुरहि-पित्त-सिंभ-मुत्तोसहायतणं सव्वओ दुरंतं गुज्झोरू-जानुजंघा-पायसंघायसंधियं असुइ कुणिमगंधि, एवं चिंतिज्जमाणं बीभत्थदरिसणिज्जं अधुवं अनिययं असासयं सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मं पच्छा व पुरा व अवस्सचइयत्वं निच्छयओ सुट्ठु जाण एयं आइनिहणं, एरिसं सव्वमनुयाणं देहं, एस परमत्थओ सभावो ।

[१०६] सुक्कम्मि सोणियम्मि य संभूओ जननिकुच्छिमज्झंमि ।

तं चेव अमेज्झरसं नवमासे घुंटियं संतो ॥

[१०७] जोणीमुहनिप्फिडिओ थणगच्छीरेण वड्ढिओ जाओ ।

पगईअमिज्झमइओ कहं देहो घोइउं सक्को ? ॥

[१०८] हा ! असुइसमुप्पन्ना य निग्गया य जेण चेव दारेणं ।

सत्ता मोहपसत्ता रमंति तत्थेव असुइ दारम्मि ॥

[१०९] किह ताव घरकुडीरी कईसहस्सेहिं अपरितंतेहिं ।

वन्निज्जइ असुइबिलं जघणं ति सक्कज्जमूढेहिं ? ॥

[११०] रागेण न जाणंति य वराया कलमलस्स निद्धमणं ।

ताणं परिनंदंता फुल्लं नीलुप्पलवणं व ॥

[१११] कित्तिअमितं वण्णे ? अमिज्झमइयम्मि वच्चसंघाए ।

रागो हु न कायव्वो विरागमूले सरीरम्मि ॥

[११२] किमिकुलसयसंकिण्णे असुइमचोक्खे असासयमसारे ।

सेयमल पुव्वडंमी निव्वेयं वच्चह सरीरे ॥

[११३] दंतमल-कण्णगूहग-सिंघाणमले य लालमलबहुले ।

एयारिसे बीभत्थे दुगुंछणिज्जंमि को रागो ? ॥

[११४] को सडण-पडण-विकिरिण-विद्धंसण-चयण-मरणधम्मम्मि ।

देहम्मि अहीलासो ? कुहिय-कट्ठिण-कट्ठ-भूयम्मि ॥

- [११५] काग-सुणगाण भक्खे किमिकुलभते य वाहिभते य ।
देहम्मि मच्चु-भते सुसाणभतम्मि को रागो ? ॥
- [११६] असुई अमिज्झपुन्नं कुणिम-कलेवरकुडिं परिसवन्ति ।
आगंतुय संठवियं नवच्छिड्डमसासयं जाण ॥
- [११७] पेच्छसि मुहं सतिलयं सविसेसं रायएण अहरेणं ।
सकडक्खं सवियारं तरलच्छिं जोव्वणत्थीए ॥
- [११८] पेच्छसि बाहिरमट्ठं न पेच्छसी उज्झरं कलिमलस्स ।
मोहेण नच्चयंतो सीसघडीकंजियं पियसि ॥
- [११९] सीसघडीनिग्गालं जं निट्ठहसि दुगुंछसी जं च ।
तं चेव रागरत्तो मूढो अइमुच्छिओ पियसि ॥
- [१२०] पूइय-सीसकवालं पूइय-नासं च पूइ-देहं च ।
पूइय-छिड्डविच्छिड्डं पूइय-चम्मण य पिणद्धं ॥
- [१२१] अंजणगुणसुविसुद्धं प्हाणुव्वट्टणगुणेहिं सुकुमालं ।
पुप्फुम्मीसियकेसं जणेइ बालस्स तं रागं ॥
- [१२२] जं सीसपूरओत्ति अ पुप्फाइं भणन्ति मंदविन्नाणा ।
पुप्फाइं चिय ताइं सीसस्स य पूरयं सुणह ॥
- [१२३] मेदो वसा य रसिया खेले सिंघाणए य छुभ एयं ।
अह सीसपूरओ भे नियगसरीरम्मि साहीणो ॥
- [१२४] सा किर दुप्पाडिपूरा वच्चकुडी दुप्पया नवच्छिड्डा ।
उक्कडगंधविलित्ता बालजनो मुच्छिउं गिद्धो ॥
- [१२५] जं पेम्मरागरत्तो अवयासेऊणं गूढ-मुत्तोलिं ।
दंतमलचिक्कणंगं सीसघडीकंजियं पियसि ॥
- [१२६] दंतमुसलेसु गहणं गयाण मंसे य ससयमीयाणं ।
वालेसु य चमरीणं चम्मनहे दीवियाणं च ॥
- [१२७] पूइयकाए य इहं चवणमुहे निच्चकाल वीसत्थो ।
आइक्खसु सब्भावं किम्मिसि गिद्धो तुमं मूढ ! ॥
- [१२८] दंता वि अकज्जकरा वाला वि विवड्डमाण बीभच्छा ।
चम्मं पि य बीभच्छं भण किं तसि तं गओ रागं ? ॥
- [१२९] सिंभे पित्ते मुत्ते गूहम्मि वसाई दंतकुडीसु ।
भणसु किमत्थं तुज्झं असुइम्मि वि वड्डिओ रागो ? ॥
- [१३०] जंघट्ठियासु ऊरु पइट्ठिया तट्ठिया कडीपिट्ठी ।
कडियट्ठिवेड्डियाइं अट्ठारस पिट्ठिअट्ठीणि ॥
- [१३१] दो अच्छिअट्ठियाइं सोलस गीवट्ठिया मुणेयव्वा ।
पिट्ठीपइट्ठियाओ बारस किल पंसुली हुंति ॥

- [१३२] अट्ठियकट्ठिणे सिर ण्हारूबंधने मंसचम्मलेवम्मि ।
विट्ठा-कोट्ठागारे को वच्चघरोवमे रागो ? ॥
- [१३३] जह नाम वच्चकूवो निच्चं भिणिभिणिभिणंतकायकली ।
किमिण्हिं सुलसुलायइ सोएहि य पूइयं वहइ ॥
- [१३४] उद्धियनयनं खगमुहविकड्ठियं विप्पइन्नबाहुलयं ।
अंत-विकड्ठिय-मालं सीसघडी-पागडिय-घोरं ॥
- [१३५] भिणिभिणिभिणंत-सदं विसप्पियं सुलसुलंतमंसोडं ।
मिसिमिसिमिसंत किमियं थिविथिविथिवंत बीभत्थं ॥
- [१३६] पागडियपांसुलीयं विगरालं सुक्कसंघिसंघायं ।
पडियं निच्चेयणयं सरीरमेयारिसं जाण ॥
- [१३७] वच्चाओ असुइतरं नवहिं सोएहिं परिगलंतेहिं ।
आमग-मल्लगरूवे निच्चेयं वच्चह सरीरे ॥
- [१३८] दो होत्था दो पाया सीसं उच्चंपियं कबंधम्मि ।
कलिमलकोट्ठागारं परिवहसि दुयादुयं वच्चं ॥
- [१३९] तं च किर रूववंतं वच्चंतं रायमग्गमोइन्नं ।
परगंधेहिं सुगंधय मन्नंतो अप्पणो गंधं ॥
- [१४०] पाडल-चंपय-मल्लिय अगुरूय-चंदन-तुरूक्कवामीसं ।
गंधं समोयरंतं मन्नंतो अप्पणो गंधं ॥
- [१४१] सुहवाससुरहिगंधं वातसुहं अगुरूगंधियं अंगं ।
केसा ण्हाणसुगंधा कयरो ते अप्पणो गंधो ? ॥
- [१४२] अच्छिमलो कण्णमलो खेलो सिंघाणओ अ पूओ अ ।
असुई मुत्त-पुरीसो एसो ते अप्पणो गंधो ॥

[१४३] जाओचिय इमाओ इत्थियाओ अनेगेहिं कइवरसहस्सेहिं विविहपासपडिबद्धेहिं कामराग मोहेहिं वन्नियाओ ताओऽवि एरिसाओ, तं०-पगइविसमाओ, पियवयणवल्लीरीओ, कइयवपेमगिरितडीओ, अवराहसहस्सधरिणीओ, पभवो सोगस्स, विनासो बलस्स सूणा पुरिसाणं, नासो लज्जाए, संकरो अविनयस्स, निलओ नियडीणं, खाणी वइरस्स, सरीरं सोगस्स, भेओ मज्जायाणं, आसाओ रागस्स, निलओ दुच्चरियाणं, मईए सम्मोहो, खलणा नाणस्स, चलणं सीलस्स, विग्घो धम्मस्स, अरी साहूणं, -

- दूसणं आयारपत्ताणं, आरामो कम्मरयस्स, फलिहो मुख्खमग्गस्स, भवनं दरिद्धस्स, अवि आइं ताओ आसीविसो विव कुवियाओ, मत्तगओ विव मयणपरवसाओ, वग्घीविव दुट्ठहिअयाओ, तणच्छन्नकूवोविव अप्पगासहिययाओ, माया कारओ विव उवयारसयाबंधणपओत्तीओ, आयरियसविधं पिव बहुग्गिज्झसब्भावाओ, फुंफयाविव अंतोदहनसीलाओ -

नग्गयमग्गो विव अनवट्ठियचित्ताओ, अंतोदुट्ठवणो विव कुहियहिययाओ, कण्हसप्प विव अविस्ससणिज्जाओ, संघारो विव छन्नमायाओ, संझब्भरागो विव मुहुत्तरागाओ, समुद्वीचीओ विव चलस्सभावाओ, मच्छो विव दुपरियत्तणसीलाओ, वानरो विव चलचित्ताओ, मच्चूविव निच्चिसेसाओ -

कालो विव निरनुकंपाओ, वरुणो विव पासहत्थाओ, सलिलमिव निन्नगामिणीओ, किविणो विव उताणहत्थाओ, नरओ विव उतासणिज्जाओ, खरो विव दुस्सीलाओ दुट्ठस्सो विव दुद्धमाओ, बालो इव मुहुत्तहिययाओ, अंधकारमिव दुप्पवेसाओ, विसवल्ली विव अणल्लियणिज्जाओ, -

- दुट्ठगाहा इव वावी अणवगाहाओ, ठाणभट्ठो विव इस्सरो अप्पसंसाणिज्जाओ, किंपागफ-लमिव मुहमहुराओ, रितामुट्ठी विव बाललोभणिज्जाओ, मंसपेसीगहणमिव सोवद्धवाओ, जलियचुडली विव अमुच्चमाणडहणसीलाओ, अरिट्ठमिव दुल्लंघणिज्जाओ कुडकरिसावणो विव कालविसंवायणसीलाओ चंडसिलो विव दुक्खरक्खियाओ, अइविसायाओ,

दुगुंछियाओ, दुरूवचराओ, अगंभीराओ, अविस्ससणिज्जाओ, अणवत्थियाओ, दुक्ख रक्खियाओ, दुक्खपालियाओ, अरइकराओ, कक्कसाओ दढवेराओ रुव-सोहग्ग-मउम्मताओ, भुयगगइकुडिल-हिययाओ, कंतारगइट्ठाणभूयाओ, कुल सयण मित्तभेयण-कारियाओ, परदोसपगासियाओ, कयग्घाओ, बलसोहियाओ, एगंतहरण कोलाओ, चंचलाओ, जाइय-भंडोवगारो विव मुहारागविरागाओ, -

- अवियाइं ताओ अंतरं भंगसयं, अरज्जुओ पासो, अदारूया अडवी, अनालस्सनिलओ, अइक्खा वेयरणी, अनामिओ वाही, अविओगो विप्पलाओ, अरू उवसग्गो, रइवंतो चित्तविब्भमो, सव्वंगओ दाहो, अणब्भप्पसूया वज्जासणी, असलिलप्पवाहो, समुद्धरओ,

अवि याइं तासिं इत्थिआणं अनेगाणि नामनिरुत्ताणि । पुरिसे कामरागप्पडिबद्धे नानाविहेहिं उवायसयसहस्सेहिं वह-बंधणमानयंति, पुरिसाणं नो अन्नो एरिसो अरी अत्थित्ति नारीओ, तं०-नारीसमा न नराणं अरीओ नारीओ, नानाविहेहिं कम्महेहिं सिप्पाइएहिं पुरिसे मोहंतित्ति महिलाओ, पुरिसे मत्ते करंति त्ति पमयाओ, महंतं कलिं जणयंति त्ति महिलियाओ, पुरिसे हावभावमाइएहिं रमंति त्ति रामाओ, पुरिसे अंगानुराए करिंति त्ति अंगनाओ, नानाविहेसु जुद्धभंडण-संगामाऽडवीसु मुहाराणगिण्हण सीउण्ह दुक्ख किलेसमाइएसु पुरिसे लालंतित्ति ललनाओ, पुरिसे जोगनिओएहिं वसे ठावित्ति जोसियाओ, पुरिसे नानाविहेहिं भावेहिं वण्णित्ति त्ति वनियाओ,

काई पमत्तभावं काई पणयं सविब्भमं काई सामिव्व ववहरंति काई सत्तुव्व रोरो इव काई पयएसु पणमंति काई उवनएसु उवनमंति काई कोउयनम्मं त्ति काउं सुकडक्खनिरिक्खएहिं सविलास-महुरेहिं उवहसिएहिं उवगूहिएहिं उवसद्धेहिं गुज्झगदरिसणेहिं भूमिलिहण विलिहणेहिं च आरूहण नट्टणेहिं य बालयउवगूहणेहिं च अंगुली फोडण थणपीलण कडितडजायणाहिं तज्जाणाहिं च,

अवि याइं ताओ पासो विव ववसिउं जं पंकु व्व खुप्पिलं जं मच्चु व्व मारेउं जं अगनिव्व डहिउं जं असिव्व छिज्जिउं जे ।

[१४४] असिमसिसारच्छीणं कंतारकवाडचारयसमाणं ।

घोर-निउरंब-कंदर-चलंत-बीभच्छ-भावाणं ॥

[१४५] दोससयगागरीणं अजससयविसप्पमानहिययाणं ।

कइयवपन्नतीणं ताणं अन्नायसीलाणं ॥

[१४६] अन्नं रयंति अन्नं रमंति अन्नस्स दिंति उल्लावं ।

अन्नो कडयंतरिओ अन्नो पडयंतरे ठविओ

॥

[१४७] गंगाए वालुयाए सायरे जलं हिमवओ य परिमाणं ।

उग्गस्स तवस्स गइं गब्भुप्पत्तिं च विलयाए ॥

- [१४८] सीहे कुडंबुयारस्स पुट्टलं कुक्कुहाइयं अस्से ।
जाणंति बुद्धिमंता महिलाहियं न याणंति ॥
- [१४९] एरिसगुणजुत्ताणं ताणं कइयव्वसंठियमणाणं ।
न हु भे वीससियव्वं महिलाणं जीवलोगम्मि ॥
- [१५०] निद्धन्नयं व खलयं पुप्फेहिं विवज्जियं व आरामं ।
निद्धुद्धियं व धेनुं लोए वि अतिल्लियं पिंडं ॥
- [१५१] जेणंतरेण निमिसंति लोयणा तक्खणं च विगसंति ।
तेणंतरेण हियं चित्तसहस्साठलं होई ॥
- [१५२] जड्ढाणं वड्ढाणं निव्विण्णाणं च निव्विसेसाणं ।
संसारसूयराणं कहियं पि निरत्थयं होइ ॥
- [१५३] किं पुत्तेहिं पियाहि व अत्थेण वि पिंडिएणं बहुएणं ।
जो मरणदेसकाले न होइ आलंबणं किंचि ॥
- [१५४] पुत्ता चयंति मिता चयंति भज्जा वि णं मयं चयइ ।
तं मरणदेसकाले न चयइ सुविअज्जिओ धम्मो ॥
- [१५५] धम्मो ताणं धम्मो सरणं धम्मो गई पइट्ठा य ।
धम्मणेण सुचरिएण य गम्मइ अयरामरं ठाणं ॥
- [१५६] पीइकरो वण्णकरो भासकरो जसकरो य अभयकरो ।
निव्वुइकरो य सययं परित्त बिइज्जओ धम्मो ॥
- [१५७] अमरवरेसु अनोवमरूवं भोगोवभोगरिद्धी य ।
विन्नाणनाणमेव य लब्भइ सुकएण धम्मेणं ॥
- [१५८] देविंदचक्कवट्टित्तणाइं रज्जाइं इच्छिया भोगा ।
एयाइं धम्मलाभा फलाइं जं वावि निव्वाणं ॥
- [१५९] आहारो उस्सासो संधि छिराओ य रोमकूवाइं ।
पित्तं रुहिरं सुक्कं गणियं गणियप्पहाणेहिं ॥
- [१६०] एयं सोठं सरीरस्स वासाणं गणिय पागड महत्थं ।
मुखपउमस्स ईहह सम्मत सहस्स-पतस्स ॥
- [१६१] एयं सगडसरीरं जाइ-जरा-मरण-वेयणाबहुलं ।
तह घत्तह काठं जे जह मुच्चह सव्वदुक्खाणं ॥

मुनि दीपरत्तसागरेण संशोधितः सम्पादितश्च “तंदुलवेयालियं पइण्णयं सम्मतं”